(E - 120) यह संतोंका देश है

यह संतोंका देश है, दुःखका नहीं प्रवेश है,
स्वर्णपुरी है नाम अहो ! यहाँ नहीं कीटका लेश हैं;
–यह संतोंका०

उमरालाके शुभ प्रांगणमें श्रेष्ठी 'मोती' तात हैं,
'उजमबा' के राजदुलारेका मंगल अवतार है;
तीर्थसमा पावन मन है, खिला हुआ नंदनवन है,
मनमोहक गुरुमुद्रा पर यह न्योछावर सब जगजन हैं;
–यह संतोंका० १

गुरुवरके पावन चरणोंसे फैली हैं हरियालियाँ,
शांतिपंथका मार्ग दिखाते छाई हैं खुशियालियां;
मुक्तिके दातार हैं, जगके तारणहार हैं,
जगत शिरोमणि 'कहान गुरुवर' शासनके शणगार हैं;
–यह संतोंका० २

दिव्य विभूति 'कहानगुरुजी' सिंहकेसरी हैं जागे,
धर्मचक्रीकी अमर पताका देशोदेशमें फहराये;

वाणी अमृत घोली है, सारी दुनिया डोली है,
वीतरागके गुप्तहृदयकी अंतर ग्रंथि खोली है;
–यह संतोंका० ३

चैतन्यप्रभुका अजब-गजबका रंग गुरुमें छाया है,
और उसे ही भक्तोंके अंतस्तलमें फैलाया है;
कल्पवृक्ष चिंतामणि सम गुरु वांछित-फल-दातार हैं,
कहानगुरु ! तव चरणोंमें मम वंदन अगणित वार हैं;
–यह संतोंका० ४

शाश्वत शरण तुम्हारा हो, चाहें जगत किनारा हो,
भवभवमें तव दास रहें, बस तू आदर्श हमारा हो;
यह संतोंका धाम है, साधकका विश्राम है,
स्वर्णपुरीमें मस्त विचरते, गुरुवर आतमराम है;
–यह संतोंका० ५